मेक्सिको के छात्रों का शानदार, प्रेरक संघर्ष

सस्ती और सर्वसुलभ शिक्षा के हक के लिए नवउदारवादी आर्थिक नीतियों के विरुद्ध नौ माह तक चले ऐतिहासिक छात्र-आन्दोलन को फिलहाल कुचल दिया गया है पर इसकी मशाल मेक्सिको ही नहीं, सारी दुनिया के संघर्षरत छात्र-युवाओं को रोशनी और गर्मी देती रहेगी

अरविन्द सिंह

भारत के कोने-कोने में आज छात्र और नौजवान फीसों में बेतहाशा बढ़ोत्तरी, सीटों में कटौती और शिक्षा को बाजारू माल बना देने वाली नीतियों के खिलाफ अलग-अलग जूझ रहे हैं। हर जगह आज उन्हें पीछे हटना पड़ रहा है क्योंकि इन नीतियों के पीछे सारी दुनिया के लुटेरे वर्गों की एकजुट ताकत हैं जो इनके किसी भी विरोध को हर कीमत पर कुचल डालने पर आमादा हैं।

हम यहां हजारों मील दूर मेक्सिको के अपने युवा भाई-बहनों के उस अद्भुत और शानदार संघर्ष की कहानी हम अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं जिसकी आंच को बुर्जुआ मीडिया ने हम तक पहुंचने ही नहीं दिया। (इस आन्दोलन पर **आह्वान** का जनवरी-मार्च 2000 अंक में छपी रिपोर्ट भी देखें)

●

इस वर्ष 6 फरवरी को मेक्सिको की हथियारबन्द पुलिस ने लातिनी अमेरिका के सबसे बड़े विश्वविद्यालय **'नेशनल आटोनॉमस युनिवर्सिटी आफ मेक्सिको' (युनाम)** के विशाल कैम्पस पर धावा बोलकर नौ महीने से चले आ रहे ऐतिहासिक छात्र आन्दोलन को कुचल दिया।

20 अप्रैल 1999 को युनाम के 2,70,000 छात्रों ने उच्च शिक्षा में राजकीय सहायता में कटौती करने, सालाना प्रतीकात्मक फीस 2 सेंट में 7250 गुना की भयंकर बढ़ोत्तरी करने तथा अन्य छात्रविरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार आन्दोलन शुरू किया था। (1910 की क्रान्ति में हासिल अधिकारों के चलते यहां शिक्षा लगभग नि:शुल्क थी।) 23 अप्रैल को मेक्सिको सिटी में एक विशाल प्रदर्शन हुआ जिसमें लगभग एक लाख छात्रों और आम लोगों ने हिस्सा लिया। इसके ठीक दो दिन बाद 25 अप्रैल को हड़ताली छात्रों ने युनाम के प्रशासकीय भवन पर कब्जा कर लिया। उन्होने युनाम के टावर पर हड़ताल और संघर्ष के प्रतीक के रूप में लाल और काले बैनर टांग दिये। विश्वविद्यालय बंद कर दिया गया और शुरू हुई एक ऐतिहासिक लड़ाई।

इन नौ महीनों के दौरान विश्वविद्यालय छात्रों के कब्जे में रहा और छात्रों-युवाओं शिक्षकों-कर्मचारियों-मजदूरों और किसानों की एकता और एकजुट संघर्ष की अविस्मरणीय मिसालें यहां कायम हुईं।

युनाम का संघर्ष पूरे लातिनी अमेरिका में आम लोगों के शिक्षा के अधिकार की लड़ाई का प्रतिनिधित्व करता था। मेक्सिको की सरकार की नवउदारवादी आर्थिक नीतियों से पैदा हुए गहरे असंतोष ने इस आन्दोलन को और व्यापक बना दिया था।

गिरफ्तारियों का सिलसिला 2 फरवरी को ही शुरू हो गया था। गृहमंत्री दियोदोरो कैरास्को ने युनाम से लगे हाईस्कूल के भवन को अपने कब्जे में ले चुके छात्रों पर 'कोबरा' नाम से कुख्यात फेडरल प्रीवेंटेटिव पुलिस को टूट पड़ने का आदेश दे दिया। यह वही अर्द्धसैनिक बल था जिसने 1997 में मेक्सिको सिटी के पड़ोसी कस्बे में आन्दोलनकारी नौजवानों को क्रूरता से मौत के घाट उतार दिया था।

6 फरवरी को सुबह छह बजे नवगठित 'आतंकवाद निरोधक केन्द्रीय पुलिस बल' ने युनाम परिसर को चारों ओर से घेर लिया। छात्रों के मुकाबले भारी संख्या में मौजूद पुलिस बल ने परिसर में जबरन प्रवेश कर आन्दोलन का संचालन कर रही **हड़ताली आम परिषद (सीजीएच)** के 700 से ज्यादा छात्रों को गिरफ्तार कर लिया और उनपर आतंकवादी होने, राजकीय सम्पत्ति को नष्ट करने, डकैती, तोड़फोड़ और दंगा करने के तमाम आरोप मढ़ दिये। साफ जाहिर था कि राज्य मशीनरी अपने पूरे दमनतंत्र के साथ आन्दोलन के छात्र और शिक्षक नेताओं को नेस्तनाबूद कर देना चाहती थी। अगर उन पर आतंकवादी कार्रवाइयों में शामिल होने का आरोप पुलिस साबित कर देती तो वहां के कानून के मुताबिक उन्हें 40 वर्ष तक की गैर जमानती कैद की सजा मिल सकती थी। सरकारी नीयत का उदाहरण पहले ही सामने आ चुका था जब सरकार ने एक प्रोफेसर को कोई मामूली आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया लेकिन उन्हें "सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरनाक" बताकर जमानत देने से इंकार कर दिया था।

दिन निकलते ही पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों ने हड़ताल समर्थक छात्रों और शिक्षकों को गिरफ्तार करने के लिए दूसरे कालेजों, यहां तक कि रिहायशी मकानों पर भी हमला बोल दिया। 'आपरेशन युनाम' की चपेट में गृहणियां, पड़ोसी, निर्माण कार्य में लगे मजदूर, यहां तक कि विश्वविद्यालय भवन में सो रहे 8-8 वर्ष के अनाथ बच्चे तक आ गये। सभी गिरफ्तार कर लिये गये। हड़ताली छात्रों और हथियारों के लिए चप्पे-चप्पे की तलाशी ली गयी। पर सरकारी दावे के विपरीत कोई हथियार नहीं पाया गया।

सरकार तो आन्दोलन शुरू होते ही युनाम पर धावा बोल देना चाहती थी लेकिन तब उसकी ऐसा करने की हिम्मत नहीं थी क्योंकि छात्रों ने मजदूरों-कर्मचारियों के साथ मिलकर एक मजबूत **रक्षक दल** गठित कर लिया था। इसमें छात्रों के साथ **विश्वविद्यालय कर्मचारी यूनियन, मेक्सिको बिजली मजदूर यूनियन** और **मेक्सिको शैक्षणिक कर्मचारियों की राष्ट्रीय सांगठनिक कमेटी** शामिल थी। मजदूर संगठनों तथा सरकारी नीतियों के विरुद्ध व्यापक आबादी को गोलबंद कर सशस्त्र संघर्ष चला रहे **जपाटिस्टा** विद्रोहियों के साथ सम्बन्ध से

जाहिर है कि युनाम की हड़ताल केवल परिसर तक सीमित और गैर-राजनीतिक नहीं थी। संघर्ष सिर्फ फीस बढ़ोत्तरी के मुद्दे पर ही नहीं था बल्कि यह शिक्षा के निजीकरण और देश को तबाही की ओर ले जा रही आर्थिक नीतियों के भी खिलाफ था। जपाटिस्टा विद्रोहियों के नेता **सबकमांडेंट मारकोस** ने शुरू में ही छात्रों को सचेत किया था कि फीसें लागू करने का निर्णय युनाम को निजी हाथों में सौंपे जाने का पूर्वसंकेत है। सी जी एच ने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि उनके संघर्ष के केन्द्र में ये व्यापक मुद्दे हैं। यही कारण था कि मेक्सिको सरकार, लातिनी अमरीका के दूसरे देशों के हुक्मरान और उनके साम्राज्यवादी आका युनाम के संघर्ष को जल्द से जल्द कुचल डालना चाहते थे।

जबसे छात्रों ने परिसर को अपने नियंत्रण में ले लिया था, तभी से सरकार ने संघर्ष को तोड़ने के लिए गुपचुप तैयारियां शुरू कर दी थीं। बहुत से लोगों को डर था कि दो अक्टूबर 1968 का काला दिन फिर दोहराया जायेगा जब सेना ने छात्रों के एक जुलूस पर हमला करके 60 से ज्यादा लोगों को मार दिया था और सैकड़ों को घायल कर दिया था। इस बार सरकार मौके की खोज में थी। उसने तत्काल बल प्रयोग नहीं किया पर फेडरल प्रीवेंटेटिव पुलिस के साथ सैन्य पुलिस की एक ब्रिगेड भी तैनात कर दी जिसमें 5000 सिपाही थे।

छात्रों को उकसाने के लिए सादे वेश में पुलिस के गुण्डे परिसर में घूम-घूमकर हिंसा भड़काने की कोशिश करते रहते थे। उन्होंने अनेक छात्रों की बुरी तरह पिटाई कर डाली जिनमें छात्रों के नेता जुआन कार्लोस जराटे, रोड्रिगो फिगुएरोआ, रिकार्डो मार्तम्नेज और अलेजांद्रो एचेवारिया शामिल थे। लेकिन छात्र सतर्क थे और किसी चाल में नहीं आये।

इस बीच इन नौ महीनों में छात्रों ने अपनी रचनात्मकता और संगठन क्षमता का अद्भुत परिचय दिया। विश्वविद्यालय परिसर को अपने कब्जे में लिये हजारों छात्रों-युवाओं के लिए सामुदायिक भोजनालय चलाये जाते थे। इनके लिए अभिभावक, मजदूर यूनियनें, किसान और आन्दोलन के शुभचिन्तक टनों खाद्य सामग्री पहुंचाते रहते थे। एक पत्रकार जेरेमी साइमर के शब्दों में, ''संघर्ष की गर्मी के दौरान भी लगभग रोज प्रेस कांफ्रेंसें होती हैं और छात्रों की कमेटियां लगातार नयी स्थितियों पर चर्चा करती हैं तथा बैनर, पर्चे-पोस्टर और अन्य प्रचार सामग्री तैयार करती हैं। यही नहीं छात्र विभिन्न विषयों पर नियमित रूप से सेमिनार और वर्कशाप भी आयोजित करते हैं।''

आन्दोलन के दौरान छात्रों ने कई विशाल जुलूस निकाले। दो अक्टूबर 1999 को 60,000 लोगों ने युनाम से लेकर प्लाजा आफ थ्री कल्चर्स तक के 15 किलोमीटर लम्बे रास्ते पर मार्च किया। यही वह जगह थी जहां 1968 में छात्रों का कत्लेआम हुआ था। इससे एक माह पहले बिजली घरों के निजीकरण के खिलाफ बिजली मजदूरों के संघर्ष के समर्थन में 30,000 छात्र सड़कों पर उतर पड़े थे। साथ ही व्यापक छात्र समुदाय को अपने मुद्दों से जोड़ने के लिए सीजीएच ने कई राष्ट्रीय छात्र सम्मेलन आयोजित किये जिनमें पूरे मेक्सिको से छात्र आकर शामिल हुए। छात्रों के इन तौर-तरीकों ने व्यापक आम आबादी का दिल जीत लिया था।

लेकिन सरकार पूरी जिद के साथ अपने रुख पर अड़ी हुई थी। सार्वजनिक शिक्षा पर सब्सिडी घटाने के अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के निर्देश पर मुस्तैदी से अमल करते हुए युनाम के रेक्टर फ्रांसिस्को बार्निस ने मात्र दो सेंट की प्रतीकात्मक फीस में 7250 गुना बढ़ोत्तरी कर उसे 145 डालर तक लाने की योजना रखी थी। मई 2000 में सरकार ने इसमें 30 प्रतिशत की कमी करने का प्रस्ताव किया। छात्रों ने इस चाल को खारिज कर दिया क्योंकि उन्हें मालूम था कि हड़ताल का आवेग खत्म होते ही अगले सत्र से इसे फिर बढ़ा दिया जायेगा। हड़ताली आम परिषद (सीजीएच) ने अपनी मांगों में एक और बड़ा मुद्दा यह जोड़ दिया कि विश्वविद्यालय प्रशासन का पुनर्गठन किया जाये तथा इसे मिलकर चलाने के लिए प्रशासनिक अधिकारियों के साथ छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों को भी बराबरी के साथ शामिल किया जाये। छात्रों ने विश्वविद्यालय में दाखिले की प्रक्रिया में सुधार की भी मांग रखी।

प्रशासन ने इसे पूरी तरह खारिज कर दिया और सीजीएच ने घोषणा की कि छात्रों को लम्बी लड़ाई के लिए तैयार रहना होगा। छात्र पूरी तरह सीजीएच के साथ थे। युनाम की बन्दी के 100 दिन पूरे होने पर 28 जुलाई को दसियों हजार छात्रों ने विशाल जुलूस निकालकर दिखा दिया कि उनकी फौलादी एकता में कोई दरार नहीं आयी है।

आन्दोलन को व्यापक समर्थन की वजह समझना मुश्किल नहीं है। 1994 में मेक्सिको की अर्थव्यवस्था ढहने के कगार पर पहुंच गयी थी और आई.एम.एफ. तथा अमरीका ने 50 अरब डालर का कर्ज देकर उसे उबारा था। 'नार्थ अमेरिकन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट' (नाफ्टा) के जरिए अमरीका ने मेक्सिको की अर्थव्यवस्था को अपने साथ नत्थी कर लिया। तब से सन 2000 तक अर्थव्यवस्था के आंकड़े काफी सुधर गये हैं। विकास दर बढ़ी है, निर्यात दूना हो गया है और सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि हुई है। विदेशी निवेश भी दोगुना हो गया है। लेकिन इन चमकदार आंकड़ों के बावजूद मेक्सिको के मजदूरों की मजदूरी में 1994 के मुकाबले 40 प्रतिशत की गिरावट आयी है। बेरोजगारी बढ़ रही है। छात्र जानते हैं कि उच्च शिक्षा पाने के बावजूद उनमें से ज्यादातर का कोई भविष्य नहीं है। चौतरफा फैली हताशा और असन्तोष युनाम के जुझारू छात्र-नौजवानों के माध्यम से प्रकट हो रहे थे।

पूरे दक्षिण अमरीका में इस लम्बी लड़ाई का असर हो रहा था। कई देशों में छात्रों ने आई एम एफ के निर्देश पर बदली जा रही शिक्षा नीतियों के खिलाफ हड़तालें शुरू कर दीं। 20 मई को चीले के चार प्रमुख शहरों—सैंतियागो, वैलपराइसो, कंसेप्सियोन और एरिका—में छात्रों ने शिक्षा पर खर्च में कटौती के खिलाफ विशाल प्रदर्शन किये और सड़कों पर पुलिस से लोहा लिया। बोलीविया में नवम्बर में सांताक्रुज के गैब्रियल रेने मोरिनो विश्वविद्यालय के छात्रों और अध्यापकों ने बजट में कटौती और स्वायत्तता को खत्म करने वाले कानूनों के विरुद्ध प्रदर्शन किया। पूरे महाद्वीप में फैल चुके इस संघर्ष से उत्साहित युनाम के छात्र नवम्बर में एक विराट रैली के साथ मेक्सिको सिटी में उमड़ पड़े जिसने दुनिया के इस चंद सबसे बड़े शहरों में से एक को बिलकुल ठप कर दिया। इसके बाद सरकार बौरा सी गई। किसी भी कीमत पर इस संघर्ष को कुचल डालने की तैयारियां शुरू कर दी गईं। पर प्रत्यक्षतः कुछ नहीं किया गया जिससे छात्र थोड़े निश्चिन्त हो गये। कुछ दांव-पेंच सम्बन्धी गलतियां भी उनसे हो गईं जिनसे उनका जनसमर्थन कुछ कम हो गया। इसी मौके की ताक में बैठी सरकार फरवरी के शुरू में युनाम के बागी नौजवानों पर टूट पड़ी। लेकिन गिरफ्तारी और युनाम के छात्रों के नियंत्रण से छिन जाने के बाद भी संघर्ष खत्म नहीं हुआ। गिरफ्तार छात्रों ने जेल में भूख हड़ताल कर दी और ''मेक्सिको की जनता

(शेष पृष्ठ 18 पर)

अंधेरे में खड़ी पत्थर की दीवार नहीं है।
हम कहेंगे उनसे कि
तुम ऐसा नहीं कर सकते,
हमारी दुनिया का रहस्य
तुम्हारी मण्डी में बिकने के लिए नहीं है।
उसे लौटा दो
हमारे जंगलों की बसन्त की फड़फड़ाहट
और प्यारे बूढ़े पतझड़ और स्वप्नों
और पानी के विद्रोह के साथ।
हम समझने लगे हैं
दुनिया की तमाम लड़ाइयों
और पराजयों
और दुरभिसन्धियों को।
यह तो जानते ही थे हम
कि हमें इस बार पीछे हटना होगा।
अभी जो धूल बैठ रही है
चीजों पर,
उसे बैठना ही है
क्योंकि वह उड़ चुकी है।
वह झाड़ी जायेगी
सभी महाद्वीपों की चादरों से
बहुत मेहनत, तरतीब और सलीके के साथ।
फिर एक बार इन्द्रधनुष की
प्रत्यंचा खिंचेगी और छूटेगी
और तीर की तरह यह सदी
एक नई, बड़ी दुनिया में जा गिरेगी।

टिप्पणियां

1. दो अक्टूबर 1968 को सेना ने छात्रों के एक प्रदर्शन पर बर्बर हमला किया जिसमें 60 से ज्यादा नौजवान मारे गये और सैकड़ों घायल हो गये।

2. युनाम पर नौ महीने के कब्जे के दौरान छात्र सामूहिक भोजनालय चलाते थे जिसके लिए अभिभावक, मजदूर यूनियनें और आन्दोलन के शुभचिन्तक हर हफ्ते कई टन खाद्य-सामग्री भेजते थे।

3. सादी वर्दी में पुलिस के लोगों ने बहुत से छात्रों की पिटाई की। इनमें छात्रों के नेता कार्लोस जराटे, रोड्रिगो फिगुएरोवा, रिकार्डो मार्तम्नेज और अलेजान्द्रो इचेवारिया भी शामिल थे।

4. चीले के चार प्रमुख शहरों–सान्तियागो, वाल्पारैसो, कंसेप्सिओन और एरिका में 20 मई 1999 को छात्रों ने और नवम्बर में बोलीविया के सान्ताक्रुज विश्वविद्यालय के छात्रों और शिक्षकों ने शिक्षा पर खर्च में कटौती तथा विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता खत्म करने के विरोध में उग्र प्रदर्शन किये।

मेक्सिको के छात्रों का शानदार, प्रेरक संघर्ष

(पृष्ठ 16 का शेष)

क नाम एक घोषणापत्र'' जारी किया जिसमें कहा गया था—''हम निःशुल्क शिक्षा के लिये और अन्याय के विरुद्ध लड़ना जारी रखेंगे... हमारे लोगों का यह संघर्ष उन घृणित राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों की परिणति है जिसमें रहने के लिए हमारा देश बाध्य है।''

युनाम के आन्दोलनकारी छात्रों पर हमले से देश भर में विरोध की लहर उठने लगी। उसी रात कैम्पस में 15,000 लोगों का जुलूस निकला। अगले दिन जपाटिस्टा संगठन, मानवाधिकार ग्रुप, क्रान्तिकारी ग्रुप और यूनियनों समेत अस्सी संगठनों ने सीजीएच को अपना समर्थन दिया। बारजों (छोटे किसानों और नई आर्थिक नीतियों से तबाह छोटे व्यापारियों का आन्दोलन) ने छात्रों की रिहाई के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मांग उठाई और मेक्सिको तथा अमेरिका की सीमा पर नाकबन्दी करने का ऐलान कर दिया।

संघर्षरत छात्रों के अभिभावकों और मित्रों ने उनकी रिहाई की मांग को लेकर पुलिस स्टेशन के सामने जबर्दस्त प्रदर्शन किया। उनमें से कई तो 1968 के छात्र आन्दोलन के जुझारू नेता थे और इस आन्दोलन ने उनमें पुराने दिनों के संघर्षों की यादें ताजा कर दी थीं।

सीजीएच के बचे सदस्यों ने अपनी छह सूत्रीय मांगों में एक मांग और जोड़ ली—अपने साथियों को रिहा करने की। उन्होंने अपनी मांगों के समर्थन के लिए प्रेस विज्ञप्तियां जारी कीं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने हड़ताल के प्रश्न पर विश्वविद्यालय समुदाय को बांटने की चाल चली और अपने पक्ष में साजिशाना ढंग से जनमत संग्रह कराने में सफल रहा। उसकी फरेबी चाल में सत्ताधारी राजनीतिक दल पी.आई.आई. पूरी तौर से साझीदार था। फिर उसने हड़ताल विरोधी छात्रों, शोधकर्ताओं तथा अन्य लोगों को परिसर में घुसा कर हड़ताली छात्रों के विरोध में सभा करने के लिए उकसाया और जानबूझकर पूरे परिसर में एक तनाव का माहौल बनाने की कोशिश की। लेकिन पासा पलट गया। हड़ताल में उतरे छात्रों ने इन हड़ताल विरोधी लोगों को अपनी सभाओं में आमंत्रित किया और अपना पक्ष रखा और अधिकतर मामलों में उन्हें अपने संघर्ष का हमसफर बना लिया। उनके साथ मिलकर उन्होंने अपनी सात सूत्रीय मांगों पर प्रशासन से बातचीत करने के लिए एक संयुक्त घोषणापत्र जारी किया।

'युनाम' के अन्य लोग भी जो पहले कुलपति के झांसे में आकर हड़ताल का विरोध कर रहे थे, उन सभी छात्र-शिक्षक-अभिभावक और 'युनाम' के मेहनतकश लोगों ने अंततः सच्चाई व न्याय का साथ दिया। वे एक आम सभा में इकट्ठा हुए और गिरफ्तार छात्रों की रिहाई और उन्हें आरोपमुक्त करने की मांग को लेकर संगठित होने का निर्णय लिया। इतना ही नहीं उन्होंने कुलपति की साजिश को पहचाना और इसके खिलाफ एक हस्ताक्षर अभियान चलाने का फैसला किया। इसके लिए इस आशय का प्रपत्र तैयार किया गया—''जनमत संग्रह में मेरी भागीदारी एक विश्वास के नाते थी... भागीदारी करने के मेरे निर्णय का यह आशय कतई नहीं कि पुलिस दमन और उत्पीड़न पर मैंने अपनी मुहर लगा दी है।''

'युनाम' के छात्रों की यह हड़ताल वास्तव में मेक्सिको सरकार और उनके साम्राज्यवादी आकाओं की नीतियों के विरुद्ध एक लम्बे फैसलाकुन संघर्ष की तैयारी है। उन आर्थिक नीतियों के विरुद्ध, जिन्होंने आम जनता की जिन्दगी को तबाह-बर्बाद कर दिया है और जो अब निःशुल्क शिक्षा के बुनियादी अधिकार को भी छीन लेना चाहती हैं।

भारत और मेक्सिको में बहुत सी समानताएं हैं। हमारी तरह मेक्सिको भी प्राचीन सभ्यता और कई संस्कृतियों वाला देश है। दोनों ही देशों की जनता देशी शासक वर्गों की लूट-खसोट, भयंकर भ्रष्टाचार और बर्बर दमन की शिकार है। मेक्सिको विदेशी कर्ज के जाल में बुरी तरह फंसा है और भारत के शासक भी इस मकड़जाल में देश को उलझा चुके हैं। दोनों देशों की मेहनतकश जनता पर भूमंडलीकरण के दौर की लुटेरी आर्थिक नीतियों का कहर बरपा हो रहा है। लेकिन दोनों में एक बहुत बड़ा फर्क है। मेक्सिको के छात्र-युवा अपने देश के मजदूरों-किसानों के साथ कंधे से कंधा जोड़कर इन तबाही लाने वाली नीतियों के खिलाफ लम्बी लड़ाई में उतर चुके हैं। पर हमारे देश के नौजवान अभी भ्रम, भटकाव और बिखराव से उबर नहीं पाये हैं। युनाम के हमारे साथियों के संघर्ष की ज्वाला हमें रोशनी दिखा रही है। आओ, उठ खड़े हों! ●